संक्रमित मुर्गियों या पक्षियों के संपर्क में आने से बचें। जीवित मुर्गी एवं पक्षियों को घर पर वांध करने से बचना चाहिए। पक्षियों और मुर्गियों के कच्चे–मांस और रक्त से बने कच्चे–व्यंजनों का उपभोग न करें। कच्चे या अधपके अंडे का सेवन न करें। मुर्गियों के मांस को पकाते समय स्वच्छता का विशेष ध्यान रखें। भोजन के पूरी तरह से उबलने, तलने से उसका मुख्य तापमान लगभग 70 डिग्री सेंबीग्रेड से अधिक होता है और यह तापमान वायरस और अन्य रोग जनकों को भी नष्ट करता है। भोजन बनाने के उपकरणों जैसे :विभिन्न प्रकार के बर्तन, चाकू, चॉपिंग बोर्ड इत्यादि को अच्छी तरह से साफ करें और इसके पश्चात अपने हाथों को साबुन से अच्छी तरह से धोएँ।

मुर्गी पालकों के ध्यान देने योग्य कुछ उपयोगी एवं व्यावहारिक बातें

संक्रमित मुर्गियों को अन्य मुर्गियों से शीघ्र ही अलग करें। प्रदूषित बछावन, दानें की बोरियाँ और खाली पड़े दवाईयों के डब्बे या केन इत्यादि को जला कर नष्ट करदें। संक्रमित या दूषित सामग्रियों (जैसे :मृतपक्षी, अंडे, कूड़े, खाद, अपशिष्ट इत्यादि) को गहरा गड्ढा खोद कर दफनायें। संक्रमित मुर्गियों के रखरखाव के पश्चात अपने हाथों एवं पैरों को साबुन से अच्छी तरह धोलें और डेटॉल अथवा सेवलॉन (25 मी.ली. लीटर पानी) से धोएं। फार्म परिसर, उपकरणों और दूषित वातावरण को उपयुक्त कीटाणु शोधन रसायनों से साफ और कीटाणु रहित करें ब्लीचिंग पाउडर (50 ग्राम/लीटर), चूनापाउडर (500 ग्राम लीटर), सोडियम हाइपोक्लोराइट (2–3%), फिनाइल (2%),। प्रकोप संक्रमण की अवस्था के दौरान नए मुर्गियों या चूजों को एक–साथ समाविष्ट नहीं करें।

जैव सुरक्षा के उपाय

बर्डफ्लू से बचाव के लिए निम्नलिखित कदम उठाने चाहिए

अपने प्रक्षेत्र में संक्रमण न लाएँ, नही इसे अपने प्रक्षेत्र में या अपने कपड़ों, जूते पर फेलने दें। जहां तक संभव हो, आगंतुकों और वाहनों के प्रवेश को नियंत्रित करें। प्रवेश तक पहुंच मार्ग, पार्किंग क्षेत्र, और भंडारण क्षेत्रों को साफ सुथरा रखें। साफ पानी और कीटाणुनाशक उपलब्ध रखें और आगंतुक द्वारा उनका उपयोग सुनिश्चित करें। पड़ोस के मुर्गियों के साथ संपर्क को रोकें। फीडर, पानी के बर्तन चिकित्सीय उपकरण को साफ और कीटाणु रहित कर उपयोग करें। कीट नियंत्रण को तत्काल लागु करें। स्वच्छ एवं ताजा पीने के पानी की आपूर्ति सुनिश्चित करें। मृत मुर्गियों का समुचित निपटान करें। किसी भी पक्षियों की स्वास्थ्य स्थिति को जाँच परख कर ही खरीदें। अपने पक्षियों के बीच बीमारी के किसी भी संकेत को पहचान कर शीघ्र निदान के लिए पशुचिकित्सक से संपर्क करें। मुर्गियों की देखभाल के बाद अपने हाथों को साबुन और पानी से अच्छी तरह धोएं। बाजार, प्रदर्शनी ,प्रक्षेत्र और अन्य परिसरों का दौरा करनें से बचें जहाँ बर्डफ्लू होने की आशंका हो। वाहन और ट्रेलर को स्वच्छ और कीटाणु रहित करें, विशेषतः उन क्षेत्रों पर ध्यान दें जहां गंदगी छिपी हो जैसे कि पहिया इत्यादि। सभी जैव सुरक्षा उपायों और प्रभावित पशु से नमूना लेने के दौरान उपयोग में लाए गए व्यक्तिगत सुरक्षात्मक उपकरणों (पी.पी.ई.किट) आदि के निपटान के लिए सख्त स्वच्छता उपायों का पालन किया जाना चाहिए। बाड के अंदर रखे मुर्गियों के लिए साफ सूखा बिस्तर सुनिश्चित करें। पशुओं और मनुष्यों द्वारा उपयोग किए गए बिस्तरों का सही निपटान करें। उपयोग किए गए उपकरण जैसे डिस्पोजबल कपड़े और पशुचिकित्सा उपकरण का सुरक्षित निपटान किया जाना चाहिए।

आलेख एवं प्रस्तुतिकरणः-
डॉ. मनोज कुमार सहायक प्राध्यापक
बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय बिहार पशुविज्ञान विश्व विद्यालय,पटना- 800014

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-
प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय परिसर पटना-14
Email: deebasupatna@gmail.com (Official), dee-basu-bih@gov.in
Mob.: +91 94306 02962,+91 80847 79374

RE: 805191078I/ August/ 2022

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
BIHAR ANIMAL SCIENCES UNIVERSITY

प्रसार पुस्तिका संख्याः- DEE/2022-42

एवियन इन्फ्लुएंजा एवं इससे बचाव

प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय,पटना-14

एवियन इन्फ्लुएंजा एवं इससे बचाव

पृष्ठभूमि

एवियन इन्फ्लूएंजा एक ऐसी घातक वायरल बीमारी है जो संपूर्ण विश्व में जलीय और प्रवासी पक्षियों के बीच स्वाभाविक रूप से पायी जाती है। यह विशेषुतः मुर्गियों, अन्य पक्षियों एवं जानवरों की प्रजातियों को प्रभावित कर सकती है। इस रोग से मनुष्य भी प्रभावित हो सकते हैं।

मुर्गी, बत्तख, गीज, टर्की, गिनीफाउल, बटेर, कबूतर और कई अन्य जंगली पक्षी एवियनइन्फ्लूएंजा वायरस से प्रभावित होते हैं। बत्तख, विषाणु को बनाये रखने एवं इसके संचरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

यह बीमारी इन्फ्लूएंजा वायरस के उपप्रकार के संक्रमण से होती है। यह वायरस मुर्गियों को भारी क्षति पहुँचाता है एवं इसके साथ ही साथ मनुष्यों को भी काफी हद तक संक्रमित कर सकता है।

एवियन इन्फ्लूएंजा का संचरण

संक्रमित पक्षियों और स्वस्थ पक्षियों के बीच संपर्क से। दूषित उपकरण और सामग्री के संपर्क से। संक्रमित पक्षियों के नाक (नासिका), मुँह और आँखों से स्त्राव के संपर्क में आने से। विषाणु–दूषित एरोसोल से पक्षियों में संचरण होता है।संक्रमित मुर्गियों का मुर्गी–घर के भीतर संक्रमण को फेलाता है।

मनुष्यों में संक्रमण?

मानव में सक्रमण मुख्यतः संक्रमित पक्षी, पोल्ट्रीयाउन से संबंधित स्थानों, सतहों एवं उनके बीट से दूषित वस्तुओं के साथ सीधे संपर्क के माध्यम से होता है। संक्रमित पक्षी अपने बोड के माध्यम से वायरस का प्रचुर मात्रा में निष्कासित करते हैं। संक्रमित एरोसोल के संपर्क में आने या वायरस द्वारा दूषित वातावरण में भी संक्रमण होता है। कसाई खाना से जुड़े कर्मियों को मुर्गियों को काटने एवं उन्हें प्रोसेसिंग करने के दौरान संक्रमण की सबसे अधिक संभावना रहती है।

मुर्गियों में बर्डफ्लू के लक्षण

- सिर, पलकें, वॉटल्स, हॉक और फूलगी का सूजन
- खांसना और छींकना
- भूख एवं उत्साह की कमी
- अंडे के शेल का मुलायम या बद रूप होना
- पैरों पर सूई की नोक के जैसा लाल धब्बा उभरना
- कलगी, वाटल और पैरों पर नीला धब्बा पड़ना
- नाक से स्त्राव
- दस्त
- अंडों के उत्पादन में कमी
- रूखा एवं अस्त–व्यस्त पंख का आकार

रोकथाम

बर्डफ्लू से बचाव के लिए निम्नलिखित कदम उठाने चाहिए ।

जब तक आवश्यक न हो, मुर्गियों, बत्तखों या अन्य पक्षियों के संपर्क से बचें। अपने पक्षियों और बत्तख को एक ही बाड़ों में न रखें। यदि आप पोल्ट्री या पोल्ट्री के बीट को किसी कारण से छूते हैं या बीट से दूषित मिट्टी के संपर्क में आते हैं तो साबुन और पानी से अपने हाथ एवं पैर को अच्छी तरह से धोऐं। बच्चों को पोल्ट्री और उनके कचरे और पंखों से दूर रखें। अपने प्रक्षेत्र में संक्रमण न लाएँ, नही इसे अपने प्रक्षेत्र में या अपने कपड़ों, जूते पर फेलने दें। जहां तक संभव हो, आगंतुकों और वाहनों के प्रवेश को नियंत्रित करें। प्रवेश तक पहुंच मार्ग, पार्किंग क्षेत्र, और भंडारण क्षेत्रों को साफ सुथरा रखें। साफ पानी और कीटाणुनाशक उपलब्ध रखें और आगंतुक द्वारा उनका उपयोग सुनिश्चित करें। पड़ोस के मुर्गियों के साथ संपर्क को रोकें। फीडर, पानी के बर्तन चिकित्सीय उपकरण को साफ और कीटाणु रहित कर उपयोग करें। कीट नियंत्रण को तत्काल लागु करें। स्वच्छ एवं ताजा पीने के पानी की आपूर्ति सुनिश्चित करें। मृत मुर्गियों का समुचित निपटान करें। किसी भी पक्षियों की स्वास्थ्य स्थिति को जाँच परख कर ही खरीदें। अपने पक्षियों के बीच बीमारी के किसी भी संकेत को पहचान कर शीघ्र निदान के लिए पशुचिकित्सक से संपर्क करें। मुर्गियों की देखभाल के बाद अपने हाथों को साबुन और पानी से अच्छी तरह धोएं। बाजार, प्रदर्शनी ,प्रक्षेत्र और अन्य परिसरों का दौरा करनें से बचें जहाँ बर्डफ्लू होने की आशंका हो। वाहन और ट्रेलर को स्वच्छ और कीटाणु रहित करें, विशेषतः उन क्षेत्रों पर ध्यान दें जहां गंदगी छिपी हो जैसे कि पहिया इत्यादि। बाड़ के अंदर रखे मुर्गियों के लिए साफ सूखा बिस्तर बिछाली सुनिश्चित करें। पशुओं और मनुष्यों द्वारा उपयोग किए बिस्तरों का सही निपटान करें।

मुर्गी पालन करने वाले कृषकों द्वारा किए जाने वाले उपाय

जंगली पक्षियों और बत्तखों को फार्म परिसर से दूर रखें क्योंकि इन्फ्लूएंजा वायरस के प्राकृतिक वाहक होते हैं। शिकारी एवं मुर्दा खोर पशु या पक्षी को संक्रमित पक्षियों के संपर्क में नहीं आने दें अन्यथा वे वायरस को फैला सकते हैं। ऑल–इन एवं ऑल–आउट के उपास को सुनिश्चित करें। एवियनफ्ल्,की रोकथाम सुनिश्चित करने के लिए शेड/पेन से सभी पक्षियों को हटादें और नए चूजों के आने से पहले परिसरशेड/पेन की कीटाणुनाशक से बहुत अच्छी तरह से साफ–सफाई करनी चाहिए (ध्यान रहे की कोई पंख या बीट किसी भी परिस्थिति में बचान रहे)। वायरस, संक्रमित पक्षियों से फेलता है। ऐसे पक्षियों को एक फार्म से दूसरे फार्म में लाने एवं ले जाने से बचें। फार्म परिसर एवं उनमें इस्तेमाल हो रहे उपकरणों को साफ–सुथरा और कीटाणु रहित रखें। प्रत्येक पोल्ट्रीशेड/पेन के प्रवेश द्वार पर कीटाणुनाशक गड्ढा तैयार करें एवं उनमें पोटैशियम पर–मैगनेट का घोल भर दें। तत्पश्चात, प्रवेश करने से पूर्व इसमें जूते, चप्पल या पैरों को डूबोकर ही अंदर जाना सुनिश्चित करें। फार्म में प्रवेश करने वाले वाहन के टायरों को चूना–पानी या ब्लीचिंग पाउडर से धो कर ही अंदर जाने दें। यथा संभव आगंतु कों पोल्ट्रीफार्म शेड में प्रवेश वर्जित करें क्योंकि दूषित कपड़े और जूते से भी यह वायरस फेल सकता है।

फीड को अच्छी तरह से करें ताकि वह पक्षियों, कीड़ों और चूहों से बचा रहे। मुर्गियों को अस्वच्छ फीड ही दें। स्वच्छ स्त्रोत का पानी दें और यह सुनिश्चित करें कि यह दूषित न हो। यदि तालाबों से या किसी अन्य संदिग्ध स्त्रोत से पानी दे रहे हों तो उसे क्लोरिन युक्त कर उपयोग करना चाहिए। फार्म में काम कर रहे कर्मियों को जागरूक करें कि वे किसी भी प्रकार की असावधानी न बरतें तथा संक्रमण को फेलने से बचाएँ। फार्म के फर्श, दीवारें, मेज, स्लैब, रैक आदि एवं चाकू, हुक, चॉपिंग बोर्ड इत्यादि उपकरणों को अच्छी तरह से साफ करें। पोल्ट्री की देखभाल करने वाले श्रमिकों को साबुन एवं पानी से अच्छी तरह से हाथ धोना चाहिए। यदि संभव हो तो पोल्ट्री संबंधी कार्य निपटाने के पश्चात स्नान भी करें।

एवियन इन्फ्लूएंजा से बचाव के लिए भोजन संबंधी सावधानियाँ